HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-IV (History of Modern Asia(China & Japan))

Unit-I (BOXER REBELLION(1899-1900))

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 22

"चीन का बॉक्सर विद्रोह" (1899–1900)ई.

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

बॉक्सर आंदोलन चीन में बॉक्सरों द्वारा विदेशियों के विरुद्ध किया गया। जब विदेशी ने चीन के राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर जबरदस्ती हावी हो गए तो चीन के कुछ सुधारवादियो ने विदेशियों का विरोध किया। जिसके फलस्वरूप चीन के नए राजा ने देश में सुधार करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई। जो "100 दिनों के सुधार" के नाम से विख्यात हैं। यह सुधार असफल रहा जिसके कारण चीन में भयंकर बॉक्सर विद्रोह शुरू हो गया। जो चीन के लिए भविष्य में काफी खतरनाक निकला। बॉक्सर विद्रोह विदेशियों द्वारा दबा दिया गया और चीन पर उनका वास्तविक रुप से प्रभुत्व कायम हो गया।

बॉक्सर विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे–

✓विदेशियों द्वारा चीन में लूट–खसोट–

चीन में बॉक्सर विद्रोह का मुख्य कारण विदेशियों द्वारा चीन में लूट खसोट की नीति ही थी। विदेशियों ने चीन को अपमान और अराजकता के सिवा कुछ नहीं दिया। जब पश्चिमी देशों ने चीन की बंदरबांट के लिए छीना झपटी शुरू की और उसे प्रभाव क्षेत्र में बढ़ना बांटना शुरू किया तो चीनियों में भयानक विद्वेष फैल गया। चीन के सभी जागरूक लोग विदेशियों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे। और विदेशियों के साथ दिखाई गई नरमी के कारण मंचू शासन को कोसने लगे। इस हालत में शासन को मजबूर होकर पश्चिमी देशों के विरुद्ध सख्त रवैया अपनाना पड़ा। नवंबर 1898 ईस्वी में उसने यह आदेश जारी किया कि रेल मार्ग बनाने के आज्ञा पत्रों में खानों को खोदने और उनसे माल निकालने का अधिकार सम्मिलित नहीं है। अगले वर्ष उसने देश के सभी रेल मार्गों और सभी खानों पर राजकीय नियंत्रण कायम करने के लिए एक केंद्रीय कार्यालय खोला। साथ ही यह घोषणा भी की गई कि जब तक पहले के ठेके खत्म नहीं हो जाते तब तक नय ठेके नहीं दिए जाएंगे। यदि कोई नया ठेका दिया भी जाएगा तो उसमें आधा धन चीनियों का लगेगा और उनका प्रबंध भी उन्हीं के हाथ रहेगा। चीन

पश्चिमी देशों पर अब विश्वास नहीं कर सकता था। अतः उसने जापान से संधि करने के लिए हाथ बढ़ाया किंतु जब इस बात की भनक रूस को लगी तो वह चीन को धमकाया। जिससे डरकर चीन ने जापान से संधि करने की बात बीच में ही खत्म कर दी। चीनी शासन के विदेशियों के विरुद्ध इन कार्यवाहियों से पश्चात्य विरोधी शक्तियों का साहस और भी बढ गया और वे विदेशियों को निकाल बाहर करने के लिए कटिबद्ध हो गए। पश्चिमी देशों को हर्जाना देते देते चीन का दिवाला निकलने लगा था। इसके कारण जनता पर करो का भार बढ़ता जा रहा था। पश्चिमी देशों में बने हुए मालों से चीन का बाजार भर गया पड़ा था, इस कारण चीनी उद्योग का दिवाला निकल गया। कारीगर और दस्तकार बेरोजगार हो गए। इस समय 1898 ई. में पीली नदी के बाढ़ से शांतुंग के 1500 गांव डूब गए और वहां के लोगों को भयंकर अकाल का सामना करना पड़ा। इस परिस्थिति में जनता के असंतोष ने एक व्यापक आंदोलन का रूप ले लिया जिसे "मुक्केबाजो का विद्रोह" या "बॉक्सर विद्रोह" कहते हैं।

✓चीनियों के साथ ईसाई मिशनरियों का अपमानजनक व्यवहार–

विद्रोह का दूसरा मुख्य कारण चीनी लोगों के साथ इसाई मिशनरियों का अपमानजनक व्यवहार था। ईसाई पादरियों ने चीन के जन जीवन के हर पहलू को प्रभावित करना शुरू कर दिया था और चीन की सारी मान्यताओं को वे नष्ट भ्रष्ट कर रहे थे। चीन के लोग उनसे बहुत नाराज हो गए थे, साथ ही उनके संबंध में चीन में अनेक अफवाह फैली हुई थी। चीन में यह विश्वास किया जाता था कि ईसाई चीनी बच्चों की आंख निकाल लेने जैसा अमानवीय अनोखा रीति रिवाज अपनाते हैं। यह विश्वास चीन के भीतरी भागों में 1900 ई. तक बना रहा। अतः जैसे ही विद्रोह आरंभ हुआ वैसे ही चीनियों ने कई ईसाई पादरियों को मार डाला।

✓विदेशी विरोधी संस्थाओं का निर्माण–

बॉक्सर विद्रोह का तीसरा प्रमुख कारण जागरूक चीनियों द्वारा विदेशी विरोधी संस्थाओं का निर्माण था। यह संस्थाएं किसी भी तरह विदेशियों को अपने देश से निकाल बाहर करना चाहती थी। इन संस्थाओं में प्रमुख संस्था "ई–हो–छुआन"(मुक्केबाज समाज) था। इसके सदस्य काफी बलशाली थे। इसीलिए इनके संस्था के सदस्यों का नाम बॉक्सर पड़ा। शुरू में यह बॉक्सर मंचू और विदेशियों दोनों को हटाने पर तुल गए थे लेकिन जब मंचू ने उनका साथ देना शुरू किया तो वे अब सिर्फ विदेशियों को हटाने को ही दृढ़ निश्चय थे।

बॉक्सर विद्रोह का आरंभ–

मुक्केबाजों ने जब भली भांति अपनी संस्था संगठित कर ली तब वे विद्रोह की तैयारी करने लगे। विद्रोह का प्रारंभ शांतुंग प्रदेश में हुआ और 1899 ई. के अंत तक वह कई क्षेत्रों में फैल गया। चीन के लोग उन विदेशियों पर खुले रूप से आक्रमण करने लगे जो चीन के विभिन्न नगरों में आलीशान कोठियों का निर्माण कर सुख से जीवन व्यतीत कर रहे थे। विद्रोहियों ने बहुत सारे विदेशियों को जान से मार डाला। 1900 के प्रारंभ में विद्रोहियों ने पीकिंग में स्थिति विदेशी दूतावास को घेर लिया। दूतावासों ने अपनी रक्षा के लिए समुद्र तटों से युद्ध पोतों के सैनिकों को बुलावा भेजा। इस बात की खबर सुनते ही बॉक्सर लोग हद से ज्यादा क्रोधित हो गए और विदेशियों को तेजी से मारने लगे, रेल लाइनों और यातायात के साधनों को नष्ट कर दिया। 11 जून 1900 को जापानी राजदूत की हत्या कर दी गई। अगले दिन सैकड़ों ईसाइयों को जिंदा जला दिया गया। 17 जून को विदेशियों की सम्मिलित सेना ने जब ताकू की किलाबंदी पर गोलीबारी शुरू की तो विद्रोहियों ने उस पर आक्रमण कर दिया। विद्रोहियों का उत्साह और उनकी सफलता देखकर मंचू शासन भी विद्रोहियों का साथ देना शुरू कर दिया और मंचू शासन ने विद्रोहियों के साथ मिलकर विदेशी दूतावासों पर हमला कर दिया। 23 जून को एक अंग्रेज का सिर

Dr. CUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

काट कर एक पिजड़े में रखकर बाजारों और गलियों में घुमाया गया। फालत: चीन में चारों ओर बॉक्सर का विद्रोह का आतंक फैल गया।

बॉक्सर विद्रोह का दमन:–

इसी बीच विदेशी सेनाओं ने विद्रोह का दमन करने के लिए एक संयुक्त सेना का संगठन कर 14 जुलाई 1900 को विद्रोहियों के मुख्य गढ़ तीन्तसीन पर धावा बोल दिया और कई दिनों की लड़ाई के उपरांत उस पर कब्जा कर लिया। यहां बहुत ही भयंकर खूनी युद्ध हुआ। लगभग 15000 चीनी मारे गए। इसके बाद विदेशियों की सेना ने 12 अगस्त को पिंकिंग पर आक्रमण कर दूतावासों को मुक्त करा लिया और बॉक्सर विद्रोह को पूरी तरह दबा दिया गया। जिसके फलस्वरूप आगे चलकर बांक्सर समझौता हुआ। जो विदेशियों के हित में था।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)